MAITHILI

PAPER—II

(LITERATURE)

Time Allowed : Three Hours	Maximum Marks : 250

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions

There are EIGHT questions divided in two Sections.

Candidate has to attempt FIVE questions in all.

Question Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, THREE are to be attempted choosing at least ONE question from each Section.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answers must be written in MAITHILI.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

SECTION—A

1. काव्य-वैशिष्ट्यकें निर्दिष्ट करैत निम्नलिखित अवतरणक सप्रसंग व्याख्या करू जाहिमे भाव स्पष्ट रहए (उत्तर अधिकतम 150 शब्दमे दातव्य) : 10×5=50

(क) भुस्साक आगि जकाँ नहूँ नहूँ
जरै छी मने मने हमहूँ
फटै छी कुसियारक पोर जकाँ
चैतक पछवामे ठोर जकाँ।

(ख) की हम साँझक एकसरि तारा
भादव चौठिक चन्दा।
ऐसन कए पियाए मोर मुख मानल
मो पति जीवन मन्दा॥
वामहु गति जत समदि पठौलनि
से सबे कहि कहि गेलि।
तेसरि तिथि ससि सामर परवनिसि
दसमि दसा मोरि भेलि॥

(ग) पहिलहि कूल तूल-सम ऊड़ल जाकर बेनुक फूके।
धरम करम मति भरम-सरिस भेल नारी गिरिसम दुःखे॥
सजनी, किअ हम करब उपाय।
हेरइत से कान्ह अपन-अपनतन काहि करब अन्तराय॥

(घ) देवर-तीर जेहन प्रलयानल, रावणगण वन झूर।
के हम थिकहुँ ककर हम कामिनि, परिचय पओता क्रूर॥
सकल तमीचर तामस तम सम, श्रीरघुनन्दन सूर।
हमर यहन गति दैव देखै छथि, नहि उपाय कछु फूर॥

(ङ) शार्दूली की कखनहु पाबए वास
जम्बूकक? की ज्वलित तप्त अंगार
तृणचय सकय झोंकि? की चम्पक त्रास
भ्रमर तुच्छ कए सकए कतहु उपभोग?
जँ हम कएल न तजि पाण्डवपति पंच
आन पुरुष प्रति कखनहु स्वपनहु चित्त
नहि कीचक कए सकत हमर तन स्पर्श।

2. (क) 'रमेश्वर चरित मिथिला रामायण'क 'बालकाण्ड'क काव्यगुणक समीक्षा करू। 25

(ख) काव्य-वैशिष्ट्यक दृष्टिएँ 'दत्तवती' महाकाव्यक प्रथम सर्गक मूल्यांकन करू। 25

3. (क) ''विषयवस्तुक उपस्थापनमे आडम्बरहीन सहज, सरल भाषाक प्रयोग कए महाकवि मनबोध जेहन रचनाक सृजन कएलन्हि ओ लोकोत्तर आनन्द प्रदान करैत अछि।'' एहि कथनक आलोकमे 'कृष्णजन्म' महाकाव्यक समीक्षा करू। 25

(ख) ''समकालीन मैथिली कविताक मूल स्वर अछि सामाजिक विसंगति पर कड़गर प्रहारक स्वर।'' एहि कथनक सार्थकता सिद्ध करू। 25

4. (क) ''महाकवि विद्यापति वियोगेकें प्रेमक कसौटी मानेन छथि तें हिनक नायिकाक वियोगविगलित हृदयक कारुणिक मधुर स्वर भावुककें साधारण स्तरसँ ऊपर उठाए ब्रह्मानन्दक सुखानुभूतिसँ गद्‌गद् कए दैत अछि।'' एहि कथनक आलोकमे विद्यापतिक वियोग गीतक समीक्षा करू। 25

(ख) ''पठित अंशक आधार पर गोविन्ददासक भाषा-प्रयोगक सम्बन्धमे कहल जा सकैत अछि जे कविक भाव-साधना जकाँ शब्द-साधना सेहो श्लाघ्य अछि।'' एहि कथनक मूल्यांकन करू। 25

SECTION—B

5. निम्नलिखित कथ्यक अभिव्यंजनागत वैशिष्ट्यकें निर्दिष्ट करैत सन्दर्भ-सहित व्याख्या करू जाहिमे भाव स्पष्ट रहए (उत्तर अधिकतम *150* शब्दमे दातव्य) : 10×5=50

(क) सब मात्र पगहा तोड़ि नै पड़ाइ छै। सब गाछकें बिहाड़ि नै तोड़ि-मड़ोड़ि दै छैक। बहुत गाछ बिहाड़िक दोगे-दोगे बाँचि जाइत अछि। फड़ि-फुला क' सुखा जाइत अछि। मुदा कतेक अभागल गाछ बिहाड़िक बाट पर ठाढ़ झमारल जाइत अछि, बेर-बेर मचोड़ल जाइत अछि।

(ख) जैह भेद रसगुल्ला ओ लड्डूमे छैक। रसगुल्ला सरस ओ कोमल होइछ, लड्डू शुष्क ओ कठोर। रसगुल्ला पूर्वक प्रतीक थीक, लड्डू पश्चिमक। तें हम कहैत छिऔह जे ककरो जातीय चरित्र बुझबाक हो त ओकर प्रधान मधुर देखी।

(ग) परन्तु हुनकर मन एकरा कबूल करनि तखन ने! नेनु सन कोमल हृदय एहि दृढ़ताक आँचकें कहाँ सहि पबैत अछि? किऐक मन हरदम हुनकहि संग रह' लेल लागल रहैत छनि तकर कारण ओ स्वयं नहि बुझि पबैत छथि। परन्तु अन्तमे किछु अनुभव करैत छथि—एक प्रकारक आकुलता, एक प्रकारक आकांक्षा, एक प्रकारक वेदना ...।

(घ) मुदा जखनसँ हमरा ई बुझल भेल अछि जे बड़का-बड़का अफसर आ बड़का-बड़का जातिक बड़हु बेटी नाटक खेलाइ छै, नाच करै छै, गीत गबै छै .... हम छगुन्तामे पड़ि गेल छी। कोम्हर जा रहल अछि अपन समाज, किछु बुझाइते ने अछि। सभलोक भ्रष्ट भेल जा रहल अछि।

(ङ) अनाचारियो तेहने छल ओ (हरबा-बरबा)। दुहबी-सुहबी नामक दूटा ब्राह्मण कुमारीक अपहरण कए ओकरा सभकें अपना विलास भवनमे राखि नेने छल। ओ प्रत्येक दिन कतोक रूपसीकें पकड़ि कए मंगवालिए आ अपना विलासक हेतु किछुदिन राखि कए ओकरा सभकें घुरा दैक।

6. (क) '' 'पृथ्वीपुत्र' उपन्यास सर्वहारा वर्गक अपन अधिकारक प्रति साकांक्षताक संघर्ष-कथा अछि।'' एहि कथनक समीक्षा करू। 25

(ख) 'पाँचपत्र' कथाक माध्यमसँ सिद्ध करू जे प्रो० हरिमोहन झा अपन रचनामे नै मात्र हास्य-व्यंग्यक धार प्रवाहित करैत छथि अपितु मोनकें अन्तःकरण धरि द्रवीभूत करबाक सामर्थ्य सेहो रहैत अछि हिनक कथामे। 25

7. (क) पात्र चरित्रक दृष्टिएँ 'लोरिक विजय' उपन्यासक प्रमुख पात्रक चारित्रिक मूल्यांकन करू। 25

(ख) ''राजकमलक कथा मिथिलांचलक मध्यवर्गक ओहि समस्त संस्कार पर जमि क' प्रहार करैत अछि जे ओकर आर्थिक-सामाजिक संघर्षमे बाधक थिकैक।'' 'कृति राजकमल'क कथाक मादें कहल गेल एहि कथनक समीक्षा करू। 25

8. (क) 'वर्णरत्नाकर'क दोसर कल्लोलक विषयवस्तुक उपस्थापनमे कविक सूक्ष्म सौन्दर्य-दृष्टिक परिचय भेटैत अछि— प्रमाणित करू। 25

(ख) ''आनन्दमूर्त्ति मस्त खट्टरकका विषयवस्तुक प्रस्तुतिमे विनोदक गंगा प्रवाहित कए दैत छथि किन्तु भांगक तरंगोमे जे कहैत छथि से तर्कसंगत रहैत अछि।'' 'चाणक्यक जन्मभूमि' गप्पक प्रसगें कहल गेल एहि उक्तिक समीक्षा करू। 25

★★★